यदि परमेश्वर का न्याय या यीशु मसीह का पुनरागमन तुम्हें बेचैन करता है या क्रोधित करता है, लेकिन समृद्धि, आशीष और सफलता के संदेश तुम्हें उत्साहित करते हैं – तो यह एक गंभीर चेतावनी है। यह इस बात का संकेत हो सकता है कि तुम्हारे लिए सचाई से ज़्यादा आराम मायने रखता है।
बाइबल ऐसे दृष्टिकोण को आध्यात्मिक रूप से खतरनाक बताती है।

शैतान की पुरानी चाल: सत्य को तोड़-मरोड़ देना

शुरुआत से ही शैतान की योजना यही रही है — परमेश्वर के सत्य को कुछ और आकर्षक बना देना। अदन की वाटिका में परमेश्वर ने आदम और हव्वा को स्पष्ट रूप से चेतावनी दी:

“पर भले-बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल तू कभी न खाना; क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।”
– उत्पत्ति 2:17 (ERV-HI)

शैतान ने परमेश्वर का विरोध किया और एक नरम लेकिन झूठी बात कही:

“तुम निश्चय न मरोगे।”

– उत्पत्ति 3:4 (ERV-HI)

हव्वा ने इस झूठ को इसलिए स्वीकार किया क्योंकि वह आशाजनक और आध्यात्मिक लग रहा था — लेकिन वह घातक था। यही उस विचारधारा की जड़ है जिसे कुछ मसीही विद्वान “गौरव की धर्मशास्त्र” (Theology of Glory) कहते हैं — एक ऐसा दृष्टिकोण जो केवल आशीष और विजय पर ध्यान देता है लेकिन पाप, मन फिराव और क्रूस को नजरअंदाज़ करता है।

परन्तु सच्चा मसीही धर्मशास्त्र परमेश्वर की भलाई और कठोरता दोनों को स्वीकार करता है:

“इसलिये परमेश्वर की भलाई और कठोरता दोनों पर ध्यान कर: जो
गिर पड़े हैं उन पर कठोरता, और तुझ पर भलाई, यदि तू उसकी भलाई
पर बना रहे।”
– रोमियों 11:22 (ERV-HI)

आज की कलीसियाओं में “कोमल सुसमाचार”

आज कई चर्च ऐसा सुसमाचार प्रचार करते हैं जिसमें कटु सत्य नहीं

होते। पाप, न्याय और नरक जैसे विषयों को या तो नजरअंदाज़ किया जाता है या हल्का बना दिया जाता है।
इसके बदले में, लोग केवल यह सुनना चाहते हैं कि ईश्वर तुम्हें ऊँचा उठाएगा, सफल बनाएगा, आशीष देगा, भले ही जीवन में अवज्ञा हो।

परंतु पवित्र शास्त्र इस तरह की मानसिकता के विरुद्ध स्पष्ट चेतावनी देता है:

“क्योंकि यह तो एक बलवाई जाति है, झूठ बोलने वाले लड़के हैं,
जो यहोवा की व्यवस्था को सुनना नहीं चाहते। वे दर्शकों से
कहते हैं, ‘देखना बन्द करो’, और भविष्यद्वक्ताओं से कहते हैं, ‘हमारे लिये ठीक बातें भविष्यवाणी मत करो, मधुर बातें कहो, धोखा देने वाले दर्शन दिखाओ।’”
– यशायाह 30:9–10 (O.V.)

और प्रेरित पौलुस ने ऐसे प्रचारकों के विषय में कहा, जो लोगों के कानों को गुदगुदाते हैं:

“क्योंकि ऐसा समय आएगा कि वे सही उपदेश को सहन नहीं करेंगे, परन्तु अपनी इच्छाओं के अनुसार बहुत से ऐसे शिक्षक बना
लेंगे जो उन्हें वही बताएँ जो उनके कानों को अच्छा लगे। वे

सत्य से अपना मुँह मोड़ लेंगे और कल्पित बातों की ओर मुड़ जाएँगे।”
– 2 तीमुथियुस 4:3–4 (ERV-HI)

ऐसे प्रचारकों का संदेश शैतान जैसा है — “पाप में रहो और फिर भी परमेश्वर की आशीष पाओ।”
लेकिन यह एक खतरनाक झूठ है।

सच्चा सुसमाचार अनुग्रह और सत्य दोनों को एक साथ लाता है:

“वह वचन देहधारी हुआ… और हम ने उस की महिमा को ऐसा महिमा
देखा जैसा पिता के एकलौते पुत्र की, जो अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण था।”
– यूहन्ना 1:14 (ERV-HI)

यीशु ने पापियों को क्षमा किया, पर वह यह भी कहते थे:

“जा, फिर कभी पाप मत करना।”

– यूहन्ना 8:11 (ERV-HI)

जो इस्राएल के साथ हुआ, वह आज भी हो रहा है

पुराने नियम में इस्राएल ने बार-बार सच्चे भविष्यवक्ताओं को नकार दिया और केवल उन्हें सुना जो केवल शांति और आशीष की बातें करते थे – भले ही लोग अवज्ञा कर रहे हों।

“वे मेरी प्रजा की चोट को हल्के में चंगा करते हैं, यह कहते हुए, ‘शान्ति है, शान्ति है’, परन्तु शान्ति नहीं है।”
– यिर्मयाह 6:14 (O.V.)

“इस्राएल के भविष्यवक्ता जो यरूशलेम के विषय में
भविष्यवाणी करते हैं और कहते हैं, ‘शान्ति है’, और शान्ति नहीं है; प्रभु यहोवा यों कहता है।”
– यहेजकेल 13:16 (O.V.)

आज भी हम वही सुनते हैं – “शांति है”, जबकि कोई पश्चाताप नहीं

है।

एक व्यक्तिगत चेतावनी: समय बहुत कम है

हर वर्ष हमें दो अटल सच्चाइयों के और करीब लाता है:

1. यीशु मसीह का पुनरागमन
2. तुम्हारी व्यक्तिगत मृत्यु

“हर मनुष्य को एक बार मरना और उसके बाद न्याय होना निश्चित है।”
– इब्रानियों 9:27 (ERV-HI)

किसी को दिन या समय नहीं पता। यीशु ने कहा कि वह तब आएंगे जब लोग सामान्य जीवन जी रहे होंगे — खा रहे होंगे, पी रहे होंगे, शादी कर रहे होंगे।

“जैसे लूत के दिनों में हुआ था: वे खाते-पीते, खरीदते-बेचते, लगाते और घर बनाते थे; परन्तु जिस दिन लूत सदोम से बाहर
निकला, उस दिन आग और गन्धक स्वर्ग से बरसी और उन सब को नाश कर दिया।”

– लूका 17:28–30 (ERV-HI)

मैं तुमसे पूछता हूँ:
अगर यीशु आज रात लौट आए — क्या तुम तैयार हो?
अगर तुम्हारी आज मृत्यु हो जाए — तुम्हारी आत्मा कहाँ जाएगी?

“इसलिए जागते रहो और प्रार्थना करते रहो कि जो कुछ होनेवाला है उससे बच सको और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े हो सको।”
– लूका 21:36 (ERV-HI)

अब क्या करना है?

पश्चाताप करो।
अपने पापों को नए वर्ष में मत ले जाओ।
यीशु मसीह की ओर लौटो — जिन्होंने तुम्हारे पापों के लिए मृत्यु सहन की और पुनरुत्थान किया — ताकि तुम्हें अनन्त जीवन मिल सके।

उद्धार एक उपहार है, परन्तु यह तुम्हारी पूर्ण समर्पण मांगता है।

“यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह विश्वासयोग्य और धर्मी
है कि वह हमारे पापों को क्षमा करे और हमें सारी अधर्मता से शुद्ध करे।”
– 1 यूहन्ना 1:9 (ERV-HI)

एक प्रार्थना — मन फिराव और उद्धार के लिए

“हे स्वर्गीय पिता, आज मैं तेरे पास आता हूँ, यह मानते हुए कि मैं एक पापी हूँ। मैंने बहुत कुछ ऐसा किया है जो तुझे अप्रसन्न करता है। मैं तेरे न्याय के योग्य हूँ। पर तू दयालु है। तूने वादा किया है कि जो सच्चे मन से तेरे पास आता है, तू उसे क्षमा करेगा।
आज मैं अपने पापों से मन फिराता हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु मसीह तेरा पुत्र है, जिसने मेरे पापों के लिए मृत्यु सही और पुनर्जीवित हुआ। कृपया मुझे उसके लहू से शुद्ध कर।
मुझे आज से नया बना — अनन्तकाल के लिए।
मैं तुझे अपना जीवन समर्पित करता हूँ।
धन्यवाद, प्रभु यीशु, कि तूने मुझे बचाया और अपनाया। आमीन।”

आरामदायक सुसमाचार तुम्हें सब कुछ खर्च कराएगा

अगले कदम

हर दिन बाइबल पढ़ो (यूहन्ना रचित सुसमाचार से शुरुआत करो)
नियमित प्रार्थना करो — परमेश्वर से ऐसे बात करो जैसे अपने पिता से करते हो
एक बाइबल-विश्वासयोग्य कलीसिया खोजो जो पूरा सुसमाचार सिखाती है – न कि केवल सुविधाजनक बातें
बप्तिस्मा लो – यह यीशु की आज्ञा के प्रति आज्ञाकारिता है (मत्ती 28:19)

अगर आप चाहें, तो मैं इस संदेश को पीडीएफ में भी तैयार कर सकता हूँ या ऑडियो क्लिप बना सकता हूँ — बताइए कैसे उपयोग करना चाहते हैं।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp